१४८५ बरस ईसा के जन्म के पहले 'डानायस' नामी 'मिसर' का राजा 'यूनान' में आकर रहने लगा।

१३५० बरस ईसा के जन्म के पहले 'फ्रिजिया' का मालिक 'पिलप्स' 'यूनान' में आया, यह या इसके बंश वाले ऐसे प्रबल हो गये, कि प्रायः सारा 'यूनान' इनके दख़ल में आगया। मालूम होता है कि 'यूनान' के दक्खिनी हिस्से का नाम 'पिलापोनिसस' इसी के नाम से पड़ा।

'पिलप्स' के बंश में जगत उजागर 'हरक्यूलिस' नाम बीर ने जन्म लिया ; कहते हैं कि 'आइक्सिनी' के राजा की लड़की 'अलकमीना' की सुंदरताई पर देवराज 'जुपिटर' आशक्त हुआ और उसका कन्यापन भंग किया। उक्त से 'जुपिटर' को 'हरक्यूलिस' नाम बेटा पैदा हुआ। जुपिटर की दूसरी स्त्री जूनी देवी ने अपने सौतेले बेटे हरक्यूलिस को मार डालने के लिये दो अजगर भेजे ; हरक्यूलिस ने उन दोनों को सूतिका घर ही में मारडाला। इस के पीछे हरक्यूलिस कभी तो शेर के साथ लड़ा और उसे मार-डाला और कभी कई मुंहवाले बिषैले सांप को मारडाला और कभी मैली, बदबू दुखदाई जगहों में नदी की धार फेर कर उन्हें साफ़ और सुथरी कर दिया। इस तरह लोगों की हर तरह की भलाईयां करके अपनी स्त्री के साथ अपने देश को आया। निदान उस की स्त्री ने उसे अपने बस करने के लिये एक विष के रंग से रंगा अंगा पहर ने को दिया, वह उस का ज़हर सह नहीं सका तब

जलती चिता में बैठ अपने को जला दिया; जुपिटर देव उसे जलते देख झठ रथ भेज कर स्वर्ग में बुला लिया।

यूनान का एक और प्रसिद्ध बीर 'थिसियुस' था; यह एथेन्स के राजा 'एजीउस' का बेटा था। किसी समय एथेंस के रहनेवाले क्रीट के राजा 'माईनस' से लड़ाई में हार गये; उस समय से उन लोगों को सात कुंआरी लड़कियां और उतने ही कुंआरे लड़के क्रीट के राजा के पास बतौर राजकर के भेजने पड़ते थे, शायद उन लड़कियों और लड़कों को क्रीट का राजा लौंडी और गुलाम बनाता था। लेकिन एथेंस में उस बारे में यह किस्सा मशहूर था कि क्रीट टापू में 'डिडलस' नामी किसी एक कारीगर ने राक्षस का एक घर बनाया है उस में गाय और आदमी की सूरत का एक 'मिनोटर' नामी दैत्य रहता है उसी के खाने के लिये वे लड़कियां और लड़के भेजे जाते हैं। कहते हैं कि राजकुमार 'थिसिउस' आप अपनी खुशी से क्रीट टापू में गया और कुश्ती में 'मिनोटार' को पछाड़ कर मार डाला, फिर वहां राजकुमारी 'अरियाडनी' को ब्याहा। बाद उस के अपने मुल्क को लौट आया और राज गद्दी पर बैठा; उस ने राजा होने पर अपने मुल्क की तरक्की करने में बड़ी कोशिश की। उसी ने एथेन्स वालों की बड़ाई की जड़ रोपी; उस के पहले वह शहर बहुत छोटे छोटे दिहातों में बंटा था। थिसिउस ने उन सब दिहातों को एकट्ठा किया और लोगों को

तीन वर्गों में बांटा; धनवान लोगों को राज काज का काम हवाले किया, और बीच के दर्जे के लोगों को कारीगरी का काम दिया और गरीबों के लिये खेती-बारी का काम ठहराया।

यूनान के पुरान में 'थिसिउस' के और कई बड़े बड़े आश्चर्य कामों का हाल लिखा है; उन बड़े कामों में से उस का 'आरगो' नाम जहाज़ पर सवार हो कर काले समुद्र के पार "कालचिस" में जाने का बयान बहुत ही चमत्कार है, लेकिन सच पूछो तो यह काम अकेले थिसिउस ने नहीं किया था थिसली का राजा 'जेसन' को इस में पूरी मिहनत थी। इस का हाल यों लिखा है कि 'थिवस' शहर का रहने वाला 'फ्रिकसस' और उस की बहन 'हेली' अपनी सौतेली मा की डाह के कारण अपना देश छोड़ देने का इरादा किया और उस काम में जुपिटर देव की सहायता मांगी और जुपिटर देवता ने उन लोगों की प्रार्थना मान एक सोने का भेंड़ा भेज दिया। हेली और फ्रिकसस दोनों उस भेंड़े पर सवार हो कर आकाश की राह से चले; लेकिन हेली डर कर भेंड़े से समुद्र में गिर पड़ी; समुद्र के जिस हिस्से में वह गिरी उस का नाम आज तक 'हेलिसपान्ट' है; पर फ्रिकसस कुसल छेम से कालेसमुद्र के पार जाके 'कालचिस' देश के राजा के पास पहुंचा और वहां उस की लड़की को ब्याहा; पर कालचिस के राजा ने फ्रिकसस को उस के सोने के भेंड़े

की लालच से मार डाला। तब थिसली के राजा जेसन ने कालचिस के राजा से फ्रिक्सस के खून का बदला लेने के लिये यूनान के सब बीरों को जमा किया और आरगो नामी जहाज़ पर सवार हो कर कालचिस को गया, वहां से वह सोने का भेड़ा और राजकुमारी मिडिया को साथ लेकर अपने मुल्क में फिर आया। पण्डित लोग खयाल करते हैं कि जेसन ने यह समुद्र यात्रा १६३ बरस ईसा के जन्मके पहले की थी।

इस के कुछ दिन बाद अर्थात् ११८४ बरस ईसा के जन्म के पूर्व एक बार सारे यूनान के राजा लोगों ने एक मत हो कर ट्राय पर चढ़ाई की, इस चढ़ाई को ट्राय को युद्ध यात्रा कहते हैं, इस का हाल होमर नाम प्रसिद्ध कबि ने अपनी 'इलियड' नाम पुस्तक में बड़ी खूबी के साथ बयान किया है; इस का संक्षेप हाल यह है कि स्पार्टा के राजा 'मेनिलेयस' को 'हेलन' नाम स्त्री को ट्राय का राजकुमार 'पारिस' निकाल ले गया। तब 'मेनिलियस' ने अपने भाई 'आगामेमनन' और दूसरे यूनानी राजाओं से मदद मांगी; उन लोगों ने एक मत हो प्रायः एक लाख सेना ले, ट्राय पर जो कि एशियामाइनर के इलाके में है चढ़ाई की; ट्राय में दस बरस तक बराबर लड़ाई रही, आखिर ट्राय के लोग हार गये तब यूनानी लोगों ने वहां के कुछ लोगों को तो मार डाला और कुछ लोगों को वहां से निकाल दिया और बहुतेरों को अपना

दास बना लिया; लेकिन जिन यूनानी राजाओं ने ट्राय को बर्बाद किया वे लोग सुख चैन से अपने मुल्क में आ कर नहीं रह सके; कितने तो रास्ते ही में खतम हो गये, और जो जीते मरते अपने देश में पहुंचे; उन्होंने क्या देखा कि उन के वहां न रहने के समय में दुश्मनों ने उन के राज्यों को ऐसा अपने हाथ में कर लिया था, कि फिर मिलने का कुछ भरोसा न था।

ट्राय की लड़ाई के ८० बरस के बाद यूनान में फिर एक भारी बदअमली हुई। हरक्यूलिस के वंश वाले अपने कुल-पति के मरने बाद 'डोरिस' में जा बसे; वहां 'डोरीय' लोगों की शरन में उन लोगों की दिन दिन बढ़ती होने लगी। पहले हरक्यूलिस का बड़ा बेटा 'हाइलस' ने डोरिस से आकर पिलापोनिसस दखल करने की कोशिश की, बाद इस के फिर एक बार हरक्यूलिस के घराने के लोगों ने वैसे ही चढ़ाई की लेकिन उन के हाथ कुछ न लगा दोनों कोशिशें यों ही गईं। निदान ११० बरस ईसा के जन्म के पहले 'टिमिनस' क्रेसफांटिस और 'आरिसटोडिमस' इन तीन "हाइलिस' के पोतों ने 'आरकेडिया' के सिवाय पिलापोनिसस के कुल हिस्सों को दखल कर लिया; टिमिनस 'आरगस, देश का राजा हुआ, क्रेसफांटिस को 'मेसेनिया', का राज्य मिला, और आरिसटोडिमस के दो लड़के थे 'यूरिसथिनिस, और प्रोकलिस, ये दोनों मिलकर स्पार्टा की गद्दी पर बैठे; डोरिस के लोग जिन देशों

को जीतते गये, उन की सब भूमि दख़ल करते गये, इस लिये पिलापोनिसस के पहले रहने वाले लोग झुंड के झुंड अपना मुल्क छोड़ छोड़ एशियामाइनर में जा समुद्र के कनारे बसते गये।

---

## तृतीय अध्याय।

यूनान में प्रजा राज की रीति, और मेला लगाने का बयान।

डोरीय लोगों के आने से पिलापोनिस के पहले रहने वालों में से बहुत से एशियामाइनर के किनारे जा बसे। उन में से थोड़े लोगों ने मध्य यूनान के एथेन्स शहर में जाकर सरन ली; एथेन्स के लोगों ने इन सबों को रहने के लिये जगह दी और दिलासा दी; इसी सबब से डोरीयों ने एथेन्स वालों से नाराज़ हो कर उन पर चढ़ाई की; और उसी समय यह बात जानने के लिये कि जोरावर एथेन्स वालों के साथ लड़ाई में जीत या हार होगी उन्हों ने 'डिलफी' के प्रसिद्ध 'अपोलो' देवता के पास एक आदमी भेजा; उस आदमी को वहां से यह बात कही गई कि जो डोरीया लोग एथेन्स के राजा को न मारेंगे तो उन का बार न बांकेगा और अवश्य जय पावेंगे और जो कहीं राजा को मारेंगे तो अपने मुंह का खायेंगे और

हार जायंगी. । यह बात एथेन्स वालों के भी कान तक पहुं-
च गई; तब तो एथेन्स के राजा 'कोडरस' ने अपने देश
की भलाई अपने मरने में जान शत्रु के हाथ मरना ठाना।
एक रोज वह एक किसान का भेष धर डोरीय लोगों के
कम्पू में आप चला गया और उन की फ़ौज के किसी बीर
को ललकार उससे लड़ने लगा; खूब लड़ा; निदान मारा
गया; उस के मरते ही डोरीय लोगों को मालूम हुआ
कि वह एथेन्स का राजा था तब तो उन के छक्के छूट गये
क्योंकि उन्हों ने जाना कि अब एथेन्स वाले ज़रूर जीतेंगे
कारन उन का राजा मारा गया; फिर वे कहां ठहर सकते
तुरत ही खेत छोड़ अपने देश की राह ली।

उन दिनों एथेन्स वाले पहले ही से अपने देश में प्रजा-
राज कायम करना चाहते थे; अब मौक़ा पाकर उन्हों
ने कहा कि कोडरस का सा राजा अब होना असंभव है
और ऐसे बड़े राजा के सिंहासन पर बैठने के योग्य अब
दुनिया में कोई नहीं है। इसलिये अब हम लोगों का राजा
देवराज जुपिटर होंगे और राज काज का इन्तिज़ाम
कोडरस के बड़े बेटे 'मिडन' के हाथ में रहेगा; लेकिन
उस की पदवी राजा नहीं रहेगी; वह आरकन यानी हा-
किम कहावेगा। अब यहां यह भी कहना ज़रूर है कि
एथेन्स वालों ने पहले थोड़े लोगों को जनम भर के
लिये आरकन की पदवी देते थे; पर कुछ दिनों के बाद
एक आरकन दस बरस राज-काज करने के लिये नियत

किया जाता था पर उस के बाद आरकान का काम हर साल दूसरे दूसरे लोगों को दिया जाने लगा। की-डरस के मरने के लगभग दो सौ बरस के बाद सदा हर तरह की तखड़ पखड़ होने लगी; उस समय का कोई हाल ठीक नहीं मिलता ; जैसा किसी मकान के बनने के वक्त वहां की जगह जहां मकान बनता है मिट्टी से भरी और नीची ऊंची रहती है लेकिन मकान तैयार हो जाने पर वही जगह साफ़ सुथरी हो जाती है, यूनान का भी ठीक वैसाही हाल हुआ। वहां हर तरह की लड़ाई दंगे बुरे भले काम होते होते आख़िर को यूनान में प्रजाराज यानी 'ख़ुदसर' सलतनत क़ायम हुई।

उसी समय यूनान के छोटे छोटे राज्यों में भी आपस के मेल और एक मत रहने की नेवं पड़ी, इसका हाल यह है कि पिलापोनिसस के दक्खिन पच्छिम एलिसनाम एक छोटा सा देश था वहां के राजा 'इफिटस' ने अपनी राजधानी ओलिंपिया में एक उत्तम मंदिर बनवा कर जुपिटर देवता की मूरत को उस में स्थापन किया। डिलफी के आपोलो देवता की यह आज्ञा हुई कि हर चौथे बरस सावन के महीने में यूनान के सब शहरों से ओलिंपिया शहर को दूत भेजे जावें और वहां जुपिटर और हरक्यूलिस का मेला लगे; जो लोग वहां जायें सब पांच दिन बास करें और बड़ी खुशी करें; जिन लोगों में लड़ाई भी रहे वे भी

मेले के पांच दिन तक आपस में मेल रक्खें, लड़ाई दंगा न करें, ओलिंपिया देवता की जगह सब तरह के सुख वो चैन की जगह समझी जावे यह बात यूनान की सब जगहों में जारी हुई, और ८८४ बरस ईसा के जन्म के पहले पहला ओलिंपिया का मेला लगा, इसी मेले से यूनानी लोग अपना सन् गिनना शुरू किया। जब यूनानी इतिहास लिखने वाले किसी बात का समय बतलाना चाहते तो यह लिखते हैं कि फ़लानी बात पहले दूसरे या तीसरे मेले के बीच के समय में हुई थी।

ओलिंपिया के मेला लगने बाद धीरे धीरे कोरिंथ, डेलफ़ी और आरगस, इन तीन जगहों में और तीन मेले लगने लगे। इन चार मेलों में मल्लयुद्ध, घोड़ दौर, गाड़ी दौड़, गाना, बजाना, काव्य बनाकर पढ़ना आदि बहुत सी बातों और गुनों की परीक्षा होती थी। जो इस परीक्षा में दर आते थे उन को सब लोगों के सामने एक पत्तेका मुकुट बनाकर पहनाया जाता था। इस मुकुट की क़दर लोग जैसी करते थे वैसी राजाओं के सोने के मुकुटों को भी न करते थे। सच पूछो तो यूनानियों के वे दिन बढ़ि के थे उस जमाने के लोग स्वार्थी न थे बल्कि सादे दिल और यश के भूखे थे। वे लोग यह नहीं समझते थे कि दुनिया में रुपया ही चीज़ है और दरख़्त के पत्ते के मुकुट का कुछ मोल नहीं है बरन् वे हीरे जवाहिरों के मुकुटों से भी अधिक समझते थे। सिर्फ़ कम-बख़्तों को ऐसी

समझ होती है कि रूपया ही जमा करना जीवन का फल है।

जिस जमाने की बात हो रही है उस जमाने में यूनान के लोग तीन हिस्सों में बांटे गये थे, यानी नगर वासी, दिहाती, और दास अर्थात गुलाम। जिन जिन जगहों में स्वाधीन सलतनत जारी थी वहां के सिर्फ़ शहरी लोग प्रबल थे। दिहाती और गुलामों को राज-काज से कुछ इलाक़ा नही रहता था; दिहाती लोग स्वाधीन थे और खेती या सौदागरी करके अपना दिन काटते थे। पर गुलाम अपने मालिक के ताबे में रहते थे यहां तक कि जो उन्हें मालिक जान से भी मारडालें तौभी कुछ चूं नहीं कर सक्ते थे और मालिक को उसका कुछ दण्ड भी न होता था।

---

## चौथा अध्याय।

लाइकरगस और सोलन।

यूनान भर में बड़ी बदअमली और लड़ाई भिड़ाई होती रही, पर सब के पहले स्पार्टा नगर वालों ने इन बखेड़ों से छुटकारा पाकर अपनी बढ़ती और नामवरी हासिल करने के लायक़ हुआ। चाहते हैं कि सिर्फ़ एक बड़े

मनुष्य की कोशिश और ईमानदारी से स्पार्टा वालों की भलाइयां हुईं, उस का नाम लाइकरगस था। उसने क्रीट और एशियामाइनर वगैरह बहुत सी जगहों में फिर कर विद्या हासिल की थी और उसको अच्छी तरह यह विश्वास हो गया था कि सब बुराइयों की जड़ इन्द्रियों के सुख में पड़ना है। किसी भी देश के लोग जो इन्द्रियों के सुख में तन मन से न लग जायं तो उन की बड़ाई सदा बनी रहे। स्पार्टा के लोग उस लाइकरगस से अपने देश के लिये कानून बनाने को कहा। उस ने कई एक अजीब तरह के कानून बनाये। पहला यह कि स्पार्टा के कुल लोगों के दर्मियान जायदाद बराबर बांट दी जिस से अमीर वो गरीब का भेद न रहा। दूसरा रुपये का चलन उठा दिया कि जिस से लोग रुपया जमा न करें, और लोहे का एक तरह का डंडा रुपये की जगह चलने लगा। तीसरा यह नियम किया कि स्पार्टा के लोग अपने मकान में अपने मन माना खाना पीना नहीं कर सक्ते थे। चौथा मा बाप अपनी मर्ज़ी के मुआफ़िक लड़कों को नहीं पाल सक्ते थे; लड़के बचपन ही से उस्ताद और दाई के सपुर्द किये जाते थे और वे उन की क़ायदे के मुआफ़िक लिखाते पढ़ाते थे। उस ने यह कानून भी ज़ारी किया था कि जो लड़के अंग भंग और कमज़ोर होते थे वे पाले नहीं जाते थे बल्कि टेजिटस पहाड़ की खोह में डाल दिये जाते थे।

लाइकरगस की ऐसे कानूनों की वजह से स्पार्टा के लोग धीरे धीरे अपने को दूसरी जातियों की बनिस्बत ऐसा मज़बूत पाया कि जल्द आरगस और मेसीना लोगों के साथ लड़ाई शुरू कर दी। आरगस का राजा 'फिटन' बहुत योग्य और लड़ाई में बहुत प्रबल था; इस लिये स्पार्टा के लोगों से कुछ न बन पड़ा, लेकिन मेसिना वालों को उन लोगों ने जीत लिया और उन के साथ बहुत ही बुरे तरह से पेश आये; इस कारन कुछ दिनों बाद मेसिनियों ने सर्कसी की; उनका सेनापति ऐरिसटोमिनेस बड़ा लायक था उस की तदबीर और बल से स्पार्टा के लोग बहुत घबड़ा गये। अंत को वह लड़ाई में मारा गया। तब उसके साथी सब अपने देश को छोड़ कर इटाली के दक्खिनी हिस्से में और सिसली टापू के उत्तर हिस्से में जा बसे। मेसिनिया लोगों की वह नई बस्ती आज तक मेसीना नाम से प्रसिद्ध है।

इस तरह स्पार्टा शहर बहुत बड़ा और मज़बूत हुआ। यूनान के बीच 'आर्टिका' जो प्रदेश है उस की राजधानी एथेंस शहर भी जल्द बढ़ा। एथेंस में बार बार बलवा हुआ करता था। आख़िर को साइलन नामी किसी मनुष्य ने थोड़े छोटे लोगों को अपनी तरफ़ मिला कर अपने को मालिक बनाने का यत्न किया। इस से शहर के बड़े लोग उसके बैरी हो गये। साइलन उन लोगों के साथ लड़ाई में न पा सका। इस लिये जान के डर से

अपने कई साथियों के साथ एक देवता के मंदिर में जा शरण ली। यूनानियों में यह दस्तूर था कि जो कोई देवता की शरण लेता था वह हज़ार अपराधी हो तो भी देवता के मंदिर में सजा न पाता था, लेकिन साइलन के शत्रु लोग क्रोध के मारे ऐसे अंधे हो रहे थे कि उस रीति का कुछ भी ख़याल न किया साइलन को उस के साथियों के समेत देवता के मंदिर में मार डाला।

पर थोड़े दिनों के बाद साधारण लोग प्रबल हो गये और उन बड़े अमीरों को मुल्क से निकाल दिया जिन्हों ने धर्म का बिचार न करके साइलन को देवता के मंदिर में मारडाला था। इस तरह छोटे बड़ों में लड़ाई न थी और जुल्म होने लगा; प्रजा की नाकों दम आगया इस-लिये उन्हों ने ड्रेको नामी एक महात्मा को व्यवस्थापक या मुन्तज़िम मुक़र्रर किया। इस में कुछ सन्देह नहीं कि यह ड्रेको बड़ा ज्ञानी और धर्मात्मा आदमी था लेकिन उस को यह समझ न थी कि थोड़ा दंड देने से लोग दंड पाने वालों पर जैसा चाहिए वैसा रंज नहीं होते वरन बेमुनासिब दंड के सबब लोग दंड देने वाले से नाखुश होते हैं उस ने यह नियम किया कि किसी तरह का अपराध क्यों न हो सब के लिये प्राण दंड मिलेगा। भला ऐसी आईन कहीं भी चल सक्ती है एथेंस के लोगों ने थोड़े दिनों में ड्रेको के नियमों को उठा दिया और सोलन नामी एक दूसरे मनुष्य को अपना व्यवस्थापक बनाया; इसने इस

काम की पाते ही बहुत से नियम बनाये और वे सब नियम ऐसे अच्छे थे कि उन के सबब से एथेंस शहर सबों से बढ़ गया। पहले एथेंस में सभा थी उस में लोगों की भरती वंश के अनुसार हुआ करती थी; सोलन उसके बदले दौलत के अनुसार लोगों को उस सभा में भरती करने लगा। ऐसा करने से बड़ी पदवी पाना अब लोगों के यत्न के आधीन हुआ कुल मूल का कुछ ज़रूर न रहा। सोलन ने एथंस के लोगों को चार श्रेणियों में बांटा उन में से जो लोग पहली श्रेणी में हुए उनको बड़े बड़े काम मिलते थे। दूसरे श्रेणी वालों को घोड़ों पर सवार हो कर लड़ाई में जाना पड़ता था। तीसरे दर्जे के लोगों को बर्म-बस्त्र धारन कर पैदल जाना पड़ता था चौथे दर्जे के लोग छोटे छोटे शस्त्र अर्थात हथियार लेकर लड़ते थे। इन चारो दर्जे के लोगों की जो सभा थी उसमें हर एक दर्जे की शक्ति बराबर समझी जाती थी। पहले दर्जे के लोग गिनती में कम होने के सबब वह दर्जा कमज़ोर नहीं समझा जाता था। उस सभा में राज-काज की सब बातों का विचार होता था। उस के सिवाय एथेंस में दो और सभा थी उनमें एक का नाम बूलि यानी चार सौ लोगों की सभा थी। बड़ी सभा में जो बातें विचार के लिये और जो नियम ज़ारी होने के लिये और जो जो पुरानी बाते बदली जाने के लिये पेश होने को होती थीं उन सबों की तजवीज़ इस 'बूली' सभा में पहले हो लेती थी।

दूसरी सभा का नाम 'एरिओपेगस' था, इस सभा में दि-वानी और फ़ौजदारी के मुक़द्दमों का फ़ैसला किया जाता था, इन सब सभाओं की अपील बड़ी यानी साधारण सभा में होती थी; इस कारण राज का सब इख़्तियार साधारण सभा के हाथ में धीरे धीरे चला गया।

लेकिन शुरू में साधारण सभा का सब इख़्तियार नहीं था। 'पिसिस्ट्रेटस' नाम एक आदमी ने किसी ढंग से धीरे धीरे राज की कुल इख़्तियार अपने हाथ में ले लिया था और एथेंस में निष्कंटक राज करता था। यद्यपि उसने राज बे-इन्साफ़ी से लिया था तौभी सब राज-काज बड़े न्याय के साथ किया करता था और उस के समय में लोग बहुत सुख चैन से रहे वह गुनियों का बड़ा आदर भाव करता था और कितने एक बुद्धिमानों की सहायता से बड़े कवि होमर के बनाये हुए काव्य को सुधार कर आज कल के ढंग का उसीने बनाया था।

'पिसिस्ट्रेटस' के मरने बाद उसके दो बेटे 'हिपियास' और 'हिपारकस' वे रोक टोक एथेंस की राज-गद्दी पर बैठे। लेकिन एथेंस के रहने वाले उन के राज के समय सदा बे-चैन थे क्यों कि उन्हें अधीनता का नाम भी नहीं सोहाता था, वे अवसर पाते ही उठ खड़े हुए और हिपार्कस को मारडाला और हिपियास को देश से निकाल दिया हिपियास ने अपने मुल्क से निकाले जाने पर फ़ारस में प्रथम 'दारायूस'

को शरण ली। उस समय एथेंस वाले और दारायूस के बीच लड़ाई होने का कुछ और भी सबब पड़ा था इस लिये दारायूस ने हिपियास से यह प्रतिज्ञा की कि हम यूनान को जीत कर तुम को वहां का राजा बनावें गे।
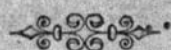
## पांचवां अध्याय।

यूनानियों की पारसियों के साथ लड़ाई।

यूनानी और फ़ारस के राजा दारायूस से लड़ाई का सामान बहुत दिनों से हो रहा था। यह कह चुके हैं कि किसी समय यूनान से बहुत से लोग एशियामाइनर के किनारे जा बसे वे सब जगहें बहुत जल्द धन, जन, विद्या और कारीगरी में यूनान से भी बढ़गईं, जैसे वृक्ष का कलम अपने मूल वृक्ष से जल्द बहुत बढ़ जाता है वैसा ही हाल उन यूनानियों का भी हुआ, जो एशियामाइनर में जा बसे थे, यद्यपि उन लोगों ने बहुत तरक्की की तौभी अपनी देशी लड़ाई झगड़ा भूले न सके और आपस में एक मत भी कभी न हुए। डोरीय आइओनीय और इयोलीय लोगों में जैसा अपने देश में लड़ाई होती थी वैसे ही ये लोग वहां जाने पर भी आपस में लड़ते झगड़ते रहे इनको आपस की

लड़ाई का फल यह हुआ कि अंतको लिडिया के राजा क्रोसस ने इन लोगों को धीरे धीरे अपने आधीन कर लिया। आपस की फुट मत का फल सदा और सब जगहों में भी ऐसा ही होता आया है।

क्रोसस की फारस के राजा साइरस के साथ लड़ाई हुई उस में उसने शिकस्त खाई उस समय से यूनानियों की वे सब बस्तियां फ़ारस के राजा के अधीन हो गईं। परंतु यूनानी लोग सदा यह चाहते थे कि औसर पातें ही बलवा मचा के स्वाधीन हो जावें। थोड़े दिनों के पीछे फ़ारस का राजा दारायूस ने डीनै नदी के किनारे सिथीय लोगों पर चढ़ाई की पर कुछ कर न सका; इस से बहुत सी बस्तियों के यूनानियों ने फ़ारस के राजा को कमज़ोर समझ कर सिर उठाया और पहले स्पार्टा और उस के बाद एथिंस से मदद मांगी। एथिंस वालों ने इन के कहने पर लड़ाई के कई जंगी जहाज़ भेजे उन की सहायता से उन शरकसों ने सारडिस शहर पर चढ़ाई की और उसको जला दिया। परंतु थोड़े ही दिनों में दारायूस ने बलवा दबाया।

दारायूस उस समय से यूनानियों से जी से चिढ़ गया। एथिंस के राजा हिपियस ने जब उस से पनाह मांगी तो दारायूस ने उस की ख़ातिर की और उसी समय यूनान को फ़तह करने चाहा उसने अपने दामाद मारडोनियस को सेना-पति बना कर बहुत से जंगी जहाज़ और लशकर के साथ यूनान में भेजा परंतु थ्रेस के दक्खिन हिस्से में

एथस पहाड़ के निकट एक भयानक आंधी आई और फ़ारसियों के बहुत से लड़ाई के जहाज़ और लश्कर को बर्बाद किया। यह चढ़ाई हर तरह से बिफ़ल हुई।

पर दारायूस का मन इस दैवी उपद्रव से कुछ भी छोटा न हुआ उसने ४८० बरस ईसा के जन्म के पूर्व पहले से भी बड़ा लश्कर इकट्ठा किया और डेटिस और आर्टाफर्निस नामी दो आदमियों को सेनापति बनाकर यूनान पर भेजा। इस लश्कर ने यूनान के इलाके के छोटे छोटे टापुओं को जीत लिया; अंतको युबिया नाम टापू को भी इन्हों ने अपने हाथ में कर लो जो कि एथेंस के नज़दीक था। एथेंस वालों ने इस बिपत के समय स्पार्टा से मदद मांगी लेकिन स्पार्टा वाले आप स्वार्थी थे दूरंदेशी न थे उन्हो ने देखा कि उस समय उनको तो कोई डर न थो इस लिये चुप चाप बैठ रहे लड़ाई में शीघ्र सहायता न की याचा की साइत ही देखते रह गये कोई शुभ लगन न ठहरी क्या करें तब एथेन्स वाले दुश्मन को सिर पर देख आप ही अकेले लड़ने को कमर बांधी उन की सब फ़ौज केवल दस हज़ार थी और फ़ारस वाले तीन लाख से कम न थे, सइ लिये फारसियों ने यह समझा था कि हम ज़रूर ही जय पावेंगे लेकिन एथेंस का सेनापति मिलटाइडिस ने मारायन नाम जगह में ऐसी तदबीर कर अपने सेनाओं को खड़ा किया, और येथेंस के मनुष्यों ने भी अपना धन धर्म और स्वाधीनता की रक्षा करने के लिये

ऐसे अद्भुत और हिम्मत के साथ वीरता की, कि फ़ारसी थोड़ी ही देर में वेदिल हो कर भाग गये।

दारायूस इस वात की खबर पाकर कुछ न घवराया वह यूनान फ़तह करने के लिये फिर तैयारी करने लगा, लेकिन उसी समय में मिसरियों में शर्कसी की इस से वह यूनान पर जल्द चढ़ाई न कर सका, और थोड़े दिनों पीछे मर गया। इन सब कारनों से ग्रीस में दस बर्ष तक कुछ उपद्रव न हुआ। और इसी समय में एथेन्स और स्पार्टा की सेना इकट्ठी होकर फ़ारसियों के अधिकार की कुल यूनानी टापुओं पर चढ़ाई की और उन्हे फिर छीन लिया।

फिर ४८० बरस ईसा के पहले दारायूस के लड़के ज़र्क्सेस ने करीब बीस लाख सेना और उसी कदर लड़ाई के जहाज़ लेकर यूनान पर चढ़ाई की यूनान के उत्तर हिस्से में जितने शहर थे सबों ने जरक्सेस के पास पानी और मिट्टी भेज कर उस के अधीन होगये लेकिन मध्य और दखिनी यूनान वालों ने जी पर खेल के लड़ने लगे। शुरू ही में थेसली देश के दखिनी हिस्से में थर्मपोली नाम पहाड़ की एक अगम तंग राह में स्पार्टा के राजा लियोनिडास ने थोड़ी सी पिलोपनिसिया की सेना के साथ जा कर ज़र्क्सेस के आने की राह रोकी। ये लोग ऐसी मर्दानगी से लड़ने लगे कि यदी एक अधर्मी यूनानी छिपी हुई राह से फ़ारसियों के लशकर को पीछे की तरफ से नहीं

लाता तो जरूर ज़र्क्सीस इसी जगह से हार कर अपने देश को लौट जाता। जो ही फ़ारसी लोग छीपी राहें से आकर यूनानियों को चारों तरफ़ से घेर लिया और स्पार्टा का राजा अपने देश की चाल मुताबिक लड़ाई की जगह से भागना वे इज्ज़ती समझ अपने लश्कर समेत वहीं खेत आया।

ज़रर्क्सीस इस तरह थर्म्मपिलि पार होकर जल्द एथेन्स शहर पर चढ़ाई करने के लिये बढ़ा। एथेन्स वाले ऐसे दुश्मन के हाथ से बचना कठिन देख थेमिस्टोक-लिस की सल्लाह से अपने लड़के बालों के साथ जहाज़ पर चढ़ कर सालिमिस, ट्रेजिन, और इजाइना वग़ैरह टापुओं में भाग गये। ज़रर्क्सीस ने उन के खाली शहर को दख़ल कर जला दिया।

इस समय फ़ारसियों के जंगी जहाजों ने यूनानियों के जंगी जहाजों पर हमला किया, यह लड़ाई सालमिस टापू के निकट समुद्र में हुई इस लिये इस लड़ाई को सालमिस की लड़ाई कहते हैं। इस में थिमिसटोकलिस ने ऐसी तदबीरें की कि पारसियों के जंगी जहाज छिन्न भिन्न हो हट गये उस समय और पारसियों का राजा एक पास के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो अपनी आंख से अपने लश्कर और अपने लड़ाई के जहाजों की वर्बादी देखी; और यूना-नियों की वीरता देख उस के दिल में ऐसा डर समाया कि वह घबरा गया और अपने सेनापति मार-

डोनियस की सलाह से उस के पास तीन लाख सिपाह छोड़ आप भाग गया। जर्क्सीस के चले जाने पर एथेंस वाले फिर अपने देश को लौट आये और बहुत जल्द अपनी नगर को फिर आबाद किया और उस की चारो तरफ एक ऐसी मजबूत सहर पनाह बनाई कि दुश्मन के आने का दाव न रही। थेमिसटौकलिस की सलाह से इस समय एथेंस वाले भी जंगी जाहाज बनाने लगे इस लिये एथेंस का शहर थोड़े दिनों में समुद्र की लड़ाई और तिजारत में सब से बढ़ गया।

इस के थोड़े ही दिनों पहले स्पार्टा का राजा पसिनियस और एथेंस का सेनापति आरिसटाइडिस सेना-एकट्ठी कर बिओशिया में गये थे और वहां पलेटिया की लड़ाई में मारडोनियस को जीत कर यूनान देश को फ़ारसियों के उपद्रव से बचाया था। जिस रोज पलेटिया की लड़ाई हुई उस रोज स्पार्टा के दूसरे राजा लिओटीकिडिस ने माइकेली की लड़ाई में एक और फ़ारसी सेना को छिन्न भिन्न किया था।

जिस समय की प्रसिद्ध वार्तों का वर्णन हुआ है वह यूनानियों के बड़ाई का समय था उस समय यूनानि खुदगर्ज न थे सिर्फ़ अपने देश की भलाई के लिये जान और माल सब संकल्प करते थे, और इसी लिये वे लोग विपत से उबरे; हर तरह की विद्या में तरक्की कर के दुनिया की भलाई करने लगे। लेकिन

जिसका जो दोष रहता है वह सदा छिपा नहीं रहता उस का कोई न कोई चिन्ह कभी न कभी जाहिर जरूर होता है। यूनानियों की आपस में जो डाह थी वह मारथन की लड़ाई में स्पार्टा वालों के न जाने से साफ़ प्रगट होती है। और जब थेमिसटोकलिस ने एथेन्स शहर को आबाद किया तब स्पार्टा के लोगों ने उसके रोक ने को कोशिश की थी इस से भी डाह साफ ज़ाहिर होती है। एथेन्स वाले भी बहुत ही छोटे दिल के और चंच- ल स्वभाव के थे, इस बात में एक प्रमाण यह है कि उन लोगों ने अपने बड़े उपकारी और लायक सेनापतियों को डाह के मारे धीरे धीरे मुल्क से निकाल दिया या किसी न किसी तरह उन को दुख दिया। पहले उन लोगों ने मारथन की लड़ाई के जीतने वाले प्रसिद्ध मिलटाइडस को एक अदना दोष लगा कर क़ैद कर दिया। और वह उसी क़ैद-खानें में मर गया। इस के पीछे आरिसटाइ- डिस नामी एक बड़े लायक आदमी को भी बिला सबब देश से निकाल दिया। आखिर को उन लोगों ने थेमिस- टोकलिस नाम नीति जानने वाले बड़े लायक मनुष्य को भी निकाल दिया। यूनानी लोग अपने ऐसे दोषों के कारन दूसरों से हार गये और उन की सब नामवरी जाती रही और वे आज कल की बुरी हालत में पहुंचे।

## छठां अध्याय।

### पसेनियस, साइमन, पेरीक्लिस, एथेन्स वालों की चूड़ान्त वृद्धि।

आख़िर जो हो पर फ़ारसियों के जीतने पर यूनानी लोग सब तरह से प्रबल हुए। वे लोग नज़दीक के टापूओं को जीत कर स्वाधीन कर दिया। और कभी कभी ऐसा भी करते थे कि एशिया में उतर कर फ़ारस राज पर हमला किया करते थे। इसी अरसे में यूनानियों की सब सेना इकट्ठी हुई; और उन के सेनापति स्पार्टा का राजा था वह बहुत प्रशंसनीय हुआ। विशेष कर के प्लेटिया की लड़ाई में जिस ने फ़ारसियों को जीता था और जिस के नाम पसेनीयस थे, उस से फ़ारस के राजा का बहुत नुक़्शान पहुंचा; इस लिये ज़र्क्सिस उन को गुप्तरूप से रिस्पत देना चाहा। अन्त को जब उन्हों ने कुल यूनान का राज्य और अपनी एक लड़की की शादी कर देनी अंगीकार किया, तब मतिमन्द पसेनियस ने अपनी जन्मभूमि के नुक़्शान करने में सम्मत हुआ। लेकिन उस के बदमतलब हासिल होने के पहले ही स्पार्टा वालों ने मालूम कर लिया और साधारन सभा में नालिश किया। पसेनीयस अपनी जान की डर से एक देवा-लय में जाकर शरण ली; और स्पार्टा वालों ने भी

उसे मारने के लिये बहुत इच्छुक हो कर उस देवालय में जा पहुंचे, लेकिन देवता की शरण में बध करना उचित न समझ कर चकरा गये। उस समय पसेनीयस की मा एक पत्थर का टुकड़ा लाकर देवालय के दर्वाज़े पर रख दिया; लोग उस समय उस पत्थर के रखने का अर्थ समझ गये और उसे उस जगह ऐसा गाड दिया, कि जिससे मंदिर का रस्ता बिलकुल बंद हो गया और पसेनियस उसके भीतर ही भूखों मर गया।

पसेनियस की ऐसी बुरी करनी से स्पार्टा की बड़ी खराबी हुई। यूनान के सब नगर वालों का बिश्वास उस पर से उठ गया इस लिये यूनानियों ने अपने लशकरों को अब उस के तावे नहीं रक्खा। अब वे एथेन्स वालों पर पूरा बिश्वास रखने लगे। इस लिये यूनान भर में एथेन्स वालों का प्रताप बढ़ा और उन लोगों ने अपने सेनापति साइमन की सलाह से फ़ारस के राज पर कभी कभी चढ़ाई कर बड़ा यश और बहुत धन हासिल किया। यह साइमन, बड़े बीर मिलटाइडिस का बेटा था, इस ने बहुत सी लड़ाईयों में फ़ारसियों को हराया था। बिशेष कर के ४६५ बरस ईसा के पहले इउरीमीडन की लड़ाई में फ़ारसी लोगों के लशकर और जंगी जहाज़ को इस ने एक ही दिन में हरा दिया।

परंतु इस समय केवल साइमन ही एथेन्स में बड़ा आदमी नहीं गिना जाता था। साइमन के बाप के दुश्मन

जानटीपस का बेटा पेरीक्लिस नाम एक आदमी बोलचाल और राज्य के बन्दोबस्त में बहुत योग्य था। वह साइमन का बिरोधी था। साइमन एथेंस के कुलीन लोगों की तरफ़ था और पेरीक्लिस वहां की साधारण प्रजा की ओर था। इन्हीं दो आदमियों के सबब से एथेंस में दो दल हो गये। और दो दल होने का एक सबब यह भी हुआ कि कुलीन लोगों ने स्पार्टा वालों से मेल रखने चाहा और प्रजा लोगों को मेल करने की इच्छा न थी। इन दिनों लाकोनिया नाम जगह में भूकम्प होने से स्पार्टा वालों की बड़ी हानि हुई। यह औसर पा कर दास लोग जो हेलट कहलाते थे; और मेसिनीया के लोग स्पार्टा के बिरुद्ध बलवा करने लगे। स्पार्टा वालों ने इस समय एथेंस वालों से मदद मांगी तब एथेंस के दोनों दलों में इस बात पर बाद बिबाद होने लगा, कि उन लोगों को मदद देनी चाहिये कि नहीं। आखिर को साइमन के दल वालों की बात रही। स्पार्टा वालों ने बहुत सी लड़ाइयों के बाद दास लोगों को दबाया और उन मेसिनीया वालों का जिन्हों ने शरकसी की थी निकाल दिया। मेसिनिया वालों ने एथेंस वालों से शरन मांगी; एथेंस वालों ने उन को नपाक्टस शहर में रहने के लिये जगह दी। इस लड़ाई का नाम तीसरी मेसिनीया की लड़ाई पड़ी। यह लड़ाई ४५५ बरस ईसा के पहले हुई थी।

इस लड़ाई के अंत में एथेंस और स्पार्टा वालों में लड़ाई

की नेव पड़ी। स्पार्टा वाले खाम खाह एथेंस वालों की बेइज़्ज़त किया, एथेंस वाले इसी डाह से तुरत स्पार्टा के शत्रु आरगस से मिल गये। इसलिये कोरिंथ नगर वाले लोग जो स्पार्टा की तरफ़ थे एथेंस वालों से बिगड़े और थिवस वाले भी कोरिंथ वालों के साथी हुए। यूनान का नक़शा देखने से यह साफ़ मालूम होगा कि जो देश या जो राज आपस में पास पास थे; उन में दुश्मनी थी। और जो आपस में दूर दूर थे उन में मेल था। सच पूछो तो दुनिया का ऐसा दस्तूर ही है; और सदा सब जगह डांड़ मेड़ की लड़ाई देखने में आती है। जो हो इन्हीं बिरोधों के कारन दो तीन लड़ाईयां हुईं। लेकिन उन से कोई फल न निकला। निदान साइमन और पेरीक्लिस एक मत हुए, और इन लड़ाइयों को दूर करने के लिये यत्न किया। इस से फिर सब शहरों में मेल हो गया और लड़ाई दूर हो गई।

इस तरह का अमन चैन ईसा के जन्म के ४४८ बरस पहले तक रहा। बाद इस के डेलफी मंदिर के अधिकार के लिये फोसिया और डेलफी वालों में दंगा हुआ। स्पार्टा वाले डेलफी की तरफ़ और एथेंस वाले फोसिया वालों के तरफ़दार हो गये। तीन बरस तक यह झगड़ा रहा। निदान ४४५ बरस ईसा के जन्म के पहले फिर दोनों में मेल हो गया। इस समय थूसीडीडिस नामी एक आदमी बड़ा विद्वान् एथेंस में हुआ, उस ने पेरीक्लिस के बिरुद्ध हो कर ऐसी सलाह दी, कि जिससे मेल न हो। लेकिन पेरीक्लिस ही की बात रही।

थूसीडीडिस बहुत अच्छा प्रसिद्ध लिखने वाला था। यह बड़े इतिहास लिखने वालों में समझा जाता था।

मेल हो जाने के बाद पेरीक्लिस ने सेम्स टापू जीत लिया। और बहुत सी जगहों में एथेंस वालों की नईबस्तियां बसाईं। इस के बाद उस ने एथेन्स वालों के मददगार दूसरे ग्रीस वालों से कहा कि अगर तुम लोग फ़ारसी लोगों के साथ लड़ने के लिये सेना और जहाज़ न दे सको, तो हर साल हम लोगों को कुछ रुपया दिया करो, तो हम ही लोग तुम्हारे बदले लड़ा करें। इस बात को सभों ने पसन्द किया उसी समय से एथेन्स दूसरे दूसरे यूनानी लोगों से कर लेने लगी। उस कर के रुपये सिर्फ़ लड़ाई ही में खर्च न होते थे वरन उस में से बहुत से एथेन्स को शोभित करने में लगते थे यह समय एथेन्स की बड़ाई का था। इस समय में एथेन्स वालों का यथार्थ में जैसा अधिकार देखा जाता है वैसाही या उस से बढ़ के उन लोगों की विद्या में भी तरक्की पाई जाती है। उस समय के चित्र बिचित्र जो सब बड़े बड़े मकान बने थे उन के खंडहर आज तक एथेन्स में देख पड़ते हैं। जिन लोगों ने उन सब को देखा है वे यही कहते हैं कि ऐसी जगह सारी दुनियां में कहीं दूसरी देखने में नहीं आती। पेरीक्लिस के समय एथेन्स जैसा कि कारीगरी के लिये मशहूर था, वैसा ही चित्र विद्या और खोदाई की कारीगरी, नाटक, काव्य, इतिहास आदि विद्याओं में भी अपना जोड़ न रख

ता था। इसी समय फ़िडियास नामी एक आदमी दुनिया में अद्वितीय कारीगर था और 'इसकाइलस' 'सफ़ोक्लिस' और 'युरीपिडिस' आदि जगत उजागर नाटक बनाने वाले हुए थे। लेकिन पेरीक्लिस ने एथेन्स वालों की भलाई के लिये इतनी कोशिश की पर एथेन्स वाले उसका गुन मानने के बदले अपने जातीय स्वभाव के अनुसार उस के साथ भी सलूक करने से बाज़ न आये। लेकिन वह बड़ा बोलने वाला था, इस लिये उसने जल्द लोगों को फिर अपने हाथ में कर लिया। जो लोग उस के विरुद्ध उठे थे वे सब लज्जित हो गये। पेरीक्लिस ने एथेन्स का बड़ा उपकार तो किया; लेकिन उस के समय में 'आसपेसिया' आदि बड़ी वेश्याओं की बढ़ती देखने से और उस देश के पंडितों के विरुद्ध धर्म लिखावट पर ध्यान देने से यह साफ़ मालूम होता है, कि बड़े धनवान एथेन्स वालों में भोग विलास में लवलीन होना और धर्म पर अश्रद्धा इसी समय से शुरू हुई थी।

---

## सातवां अध्याय।

### पिलोपोनीसीय युद्ध का वर्णन निसियास का मेल।

एथेन्स वालों ने यूनान के दूसरे लोगों से कर लेकर उस को अपने शहर को भूषित करने और अपना बल

बढ़ाने में लगाया इस बुरे काम का फल उनको जल्द ही मिला। एथेन्स वालों के जुल्म से ग्रीस वालों के नकों दम आ गया था इस लिये उन में से बहुतेरों ने स्पार्टा से सहायता मांगी, और एथेन्स के अहंकार को भंग करने चाहा। उस से बिशेष करके ग्रीस देश में आइयोनिय और डोरीय नाम दो जात के लोग बड़े गिने जाते थे उन में से 'आइयोनीय' लोग एथेन्स वालों की तरफ़ थे और उन के तौर पर साधारन राज की रीति चलाने की इच्छा रखते थे। और डोरीय लोग स्पार्टा की तरफ़ थे और वहां वालों की रीति के अनुसार कुलीन राज की रीति चलाने के लिये यत्न करते थे। जब यह हाल हुआ तो फिर उन लोगों में दो दल हुए एक दूसरे से शत्रुता, डाह, लड़ाई, दंगा करने लगा। इन्हीं सब कारनों से प्रसिद्ध पिलापोनीसीय लड़ाई शुरू हुई; यह लड़ाई बहुत दिनों तक बनी रही अन्त में दोनों तरफ़ के लोग लड़ते लड़ते ऐसे कमज़ोर हो गये कि सहज ही उन लोगों को दूसरे शत्रु ने दबा लिया आपस में फुट का ऐसा ही फल होता है; आपस की लड़ाई दोनों तरफ़ के लोगों में से किसी के लिये अच्छी नहीं, दोनों की बुराई ही होती है।

इस लड़ाई की नेव एक अदनी बात से पड़ी थी। 'करसाइरा' टापू और 'एपिडामनस' शहर ये दोनों कोरिन्थ की नई बसाई जगह थीं। इन दोनों जगहों के लोगों

ने आपस में लड़े। 'करसाइरा' वालों ने एथेन्स से सहायता मांगी और एपिडामनस के लोगों ने कोरिन्थ वालों से मदद के वास्ते प्रार्थना की। कोरिन्थ वालों ने एथेन्स वालों से लड़ने को अपनी प्रभुता न जान स्पार्टा वालों को शरन ली। इस तरह से आर्गस को छोड़ धीरे धीरे पिलापोनिसस के सब नगर और मध्य यूनान के इलाके के, मेगरा, फोसिस, लोक्रिस, बियोशिया और दूसरे दूसरे प्रदेश वाले स्पार्टा की ओर हुए, इस के सिवाय उन लोगों ने फ़ारस के राजा से भी मदद मांगी। एथेन्स वाले 'काइअस' 'लेसवस' 'प्लूटीय' 'नपार्कटस' 'आकर्नानिय' वग़ैरह के रहने वालों की सहायता ली।

इस तरह से दोनों तरफ़ के लोग जब लड़ाई के लिये तैयार हुए तो स्पार्टा का राजा आर्कीडेमस ४३१ बरस ईसा के जन्म के पहले बहुत सी सेना लेकर आर्टिका में गया, उस समय पेरीक्लिस की सलाह से एथेन्स वाले अपने शहर में जिस को चारो ओर दृढ़ दीवार बनी थी घुस कर बैठ रहे। आर्कीडेमस ने उन सब जगहों को जिसको रक्षा एथेन्स वालों ने न की मनमाना लूटा और लौट गया; पर इस के बाद एथेन्स वाले चुप न बैठ रहे, वे तुरत अपने जंगी जहाज़ों को तैयार कर पिलापोनिसस के समुद्री किनारों पर जा उतरे, और स्पार्टा वाले जो कुछ उन लोगों का नुक़सान कर गये थे उस से सौ गुना अधिक नुक़सान उनका कर फिर आये।

इस पहले साल की लड़ाई में एथिन्स वालों की जीत हुई। दूसरे साल आर्कीडेमस फिर आर्टिका पर चढ़ा और एथेंस वाले फिर अपने क़िले में घुस बैठे। और उस के जाने पीछे स्पार्टा वालों को अपने जंगी जहाज़ों से छिन्न भिन्न करने लगे पर न जाने भीड़ भाड़ होने के कारन या और किसी दूसरे कारन से एथिन्स में बड़ी मरी पड़ी नगर वालों में से लग भग चार हज़ार और कुछ कम दस हजार दास मर गये, उसी समय महात्मा पेरिक्लिस भी मर गया। इस लिये उस के दूसरे बरस में भी एथिन्स वाले कुछ न कर सके क्योंकि जब आर्कीडिमस ने उन के पुराने मित्र प्लेटीया शहर के लोगों पर हमला किया और बड़ी कठिनता से उन के नगर को सत्यानाश किया, उस समय वे लोग सहायता करने न जा सके, तब अब उन से क्या हो सकता था।

पिलापोनीसिया की लड़ाई के चौथे बरस यानी ४२८ बरस ईसा के जन्म के पहले लेस्बस्टाफ़ के निवासी स्पार्टा वालों की तरफ़ से एथिन्स वालों से लड़ने को तैयार हुए, पर पाचीस नाम एथिन्स के जहाज़ों के प्रधान ने उन लोगों के ख़ास नगर 'मीटीलिनी' को ले लिया। उसी समय से लेस्बस्टाफ़ वाले जो कि पहले एथिन्स वालों के मेली थे अब अधीन हुए। उसी साल सीसिली टापू के रहने वाले अइयोनीय और डोरीय लोगों के दर्मियान भी यूनान के देशी झगड़ों की आग भभकी।

उस टापू के सिराकुस और लियनटिन इन दोनों शहरों में से पहला स्पार्टा की ओर दूसरा एथेन्स की तरफ़ हो कर आपस में लड़ने लगे।

४२६ बरस ईसा के जन्म के पहिले एजिस नामी स्पार्टा के राजा ने फिर सेना लेकर आर्टिका पर चढ़ाई की, लेकिन उस को अपने देश की रक्षा के लिये जल्द ही लौट आना पड़ा। उस का कारन यह हुआ कि डिमसथिनिस नामी एथेंस वालों के जहाज़ के सर्दार ने मेसिनिया प्रदेश में जाकर वहां के प्राचीन नगर पाइलस में एक क़िला बनाया, इस लिये चारो ओर के बहुत से मिसोनिया वाले लोग उस से आ मिले,और स्पार्टा वालों ने हज़ार किया पर क़िला न ले सके और अपने द्वार पर ऐसे शत्रु को रहते देख बहुत चिन्तित हो यह प्रतिज्ञा की कि जो चाहे सो हो पर पाइलस को ज़रूर लेंगे इस लिये उन लोगों ने स्फाकटीरिया टापू में एक छावनी बनाई। एथेंस वालों ने भी उस समय लड़ाई की जगह कई एक जंगी जहाज़ भेजे। स्पार्टा की सेना स्फाकटीरिया टापू में पाइलस क्या लेगी अब आप ही दुश्मनों के लश्करों से घिर गई, पर उस में बहुत से बड़े बड़े घराने के लोग थे, इस लिये उन को बड़ी तो इज्जत की पड़ी थी, वे लोग लड़ाई करने की विद्या में भी खूब निपुण थे। उन लोगों ने ऐसे ज़ोर शोर से लड़ना शुरू किया कि एथेंस वाले दोनों तरफ़ से चढ़ाई करने पर भी उन का टापू न ले सके। उस समय एथेंस वालों की

सभा में दो आदमी बहुत इख़्तियार रखते थे, उन में एक का नाम क्लीयन और दूसरे का नाम नीसीयास था। क्लीयन बहुत ही निर्बुद्धि, चंचल, और अहंकारी था; नीसीयास बहुत धीर, ज्ञानी, और धर्मात्मा था। जब यह हाल एथेंस में पहुंचा कि स्फाकटीया जय नहीं हो सक्ता, तब क्लीयन बोल उठा कि अगर मैं सेनापति हो ऊं तो लड़ाई में जाते ही स्पार्टा के बीर लोगों को बांध लाऊं। एथेंस वाले जानते थे कि उस से कुछ नहीं हो सकेगा पर तो भी उन लोगों ने तमाशा देखने की इच्छा से एक मत हो कर उस को सेनापति बना कर भेजा; पर किस्मत का अजीव खेल है, क्लीयन स्फाकटीया टापू में जाते ही लड़ाई की तदबीर कर रहा था कि उसी समय में स्पार्टा वालों की छावनी के निकट के वन में आग लगी, वे लोग घबरा गये अच्छी तरह से लड़ ने सके। क्लीयन ने उन सबों को सहज ही में जीत कर क़ैद कर लिया और अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। इस के बाद क्लीयन और एक लड़ाई में गया; मैसीडोनिया के नज़दीक के एक शहरों के लोग एथेंस वालों के साथ लड़ने को तैयार हुए थे। स्पार्टा का राजा ब्रासीडास जो बड़ा नेक और ज़वांमर्द था वहां आकर एथेंस वालों की बड़ी ख़राबी कर रहा था; क्लीयन उस के साथ लड़ाई में हार गया और मारा गया लेकिन स्पार्टा का राजा ब्रासीडास भी उसी समय मर गया। तब दोनों तरफ़ के लोगों ने एक दूसरे की बर्बादी देख कर

लड़ाई करना छोड़ दिया, और ४२१ बरस ईसा के पहले आपस में मेल किया। नीसीयास के द्वारा यह मेल हुआ इस लिये इस को नीसीयास की सन्धि कहते हैं।

---

## आठवां अध्याय।

### सिसिली पर चढ़ाई-आलसीवाइडिस, एथेंस के स्वाधीनता का नाश।

यूनान में कोई मेल बहुत दिन तक रहने को नहीं। बिशेष कर के इस समय 'निसियास' का बिरोधी 'आलसी-वाइडिस' नामी एक जवान जो बड़ा गुणवान था पर आप-स्वार्थी और अधर्म्मी था। एथेंस वालों की सभा में अपनी बड़ाई देखाने लगा। वह यह चाहता था कि फिर दोनों दलों में लड़ाई हो जिस में कि वह सेनापति का काम पावे और धन जमा करे। उसी के करतब से फिर लड़ाई शुरू हुई। इस लड़ाई में 'मिलस' टापू एथेन्स वालों के हाथ लगा। उस के कुछ दिन बाद एथेन्स वालों ने सिसिली टापू को जय करने की इच्छा से बहुत से जहाज़ और लशकर भेजे। पहले 'आलसीबाइडिस' 'लामाकस' और निसियास' ये तीन सेनापति हो कर गये; लेकिन आलसी-

वाइडिस' के शत्रु की तरफ़ के लोग उस के पीछे में बलवा मचाने लगे तब उस के फिर आने के लिये एक चिट्ठी भेजी गई; उस ने उस चिट्ठी के पाते ही सेनापति का काम छोड़ स्पार्टा में चला गया। वह वहां जाकर लोगों को यह सलाह देने लगा कि ऐसा यत्न करना चाहिये जिस में एथेन्स वाले सिसिली जय न कर सकें स्पार्टा वालों ने उस के बहकाने पर 'गिलिपस' नामी अपने सेनापति को बहुत लशकर समेत सिसिली टापू में भेजा। उस समय वहां हरमोक्रेटिस नामी एक आदमी बड़ा बोलने वाला और बीर सिराकुसीय नगर का सर्दार बन कर उस की रक्षा करता था। जब गिलिपस उसी के साथ जामिला तब एथेन्स वाले कमज़ोर हो गये। जिस देश के आस पास की जगह मालूम नहीं रहती और जहां के समुद्र का यह हाल कि कहां कितना गहिरा और कहां कैसा पानी है मालूम नहीं रहता और अगर उस देश के प्रजा लोग बिगड़ बैठें तो उस देश को जय करना बहुत ही कठिन है। सिवा इस के निसियास कुछ बड़ा योग्य सेनापति न था और उस का साथी 'डीमसथिनिस' भी उस के समान ही था। इस लिये चतुर 'हर्मक्रेटिस और योद्धा गिलिपस से वे दोनों हार गये तब लशकर और जहाज़ समेत क़ैद कर लिये गये और बहुतेरे सिसिली वालों के गुलाम बनाये गये। एथेंस में यह ख़बर पहुंचते ही हाहाकार पड़ गया। एथेन्स वालों को उसी बड़ी मालम हुआ कि

उन का नाम, माल, और यश सब सिसिली के समुद्र में डूब गया और अब फिर कभी निकल ने की आस न रही अगर स्पार्टा के लोग उसी समय चढ़ दबाते तो एथेंस ले लेते लेकिन उन लोगों ने उस समय कुछ नहीं किया केवल आर्टिका देश के 'डिसीलिया' नामी जगह में एक क़िला बनाया जो बतौर कांटे के एथेंस वालों के तन में टपक ने लगा। आलसीबाइडिस भी स्पार्टा की तरफ़ हो कर उन लोगों को स्पार्टा की तरफ़ मिलाने लगा जो पहले एथेंस वालों के मित्र थे।

इस समय एथेन्स वाले यह समझे कि उनका अब कोई सहायक न रहा आलसीबाइडिस को फिर अपने देश को बुलाया। आलसीबाइडिस ने कहला भेजा कि अगर तुम लोग राज की रीत बदल कर साधारन सभा की शक्ति घटा दो और हमारी इच्छा के अनुसार चार सौ आदमियों के हाथ में राज का काम सौंपो तब हम तुम्हारा सेनापति होकर लड़ाई में दुश्मनों का सामना करें। बिचारे एथेन्स वालों को यह भी मानना पड़ा तब आलसी-बाइडिस आप उनका सेनापति हुआ और झट स्पार्टा वालों की सेना को मार भगाया उनके जहाज़ के सर्दार मिंडेरस को लड़ाई में मारा और उसके तावे जितने जहाज़ थे सब छीन लिये गये। इस पर एथेन्स वाले बहुत प्रसन्न हुए लेकिन इसके थोड़े दिनों बाद आलसी-बाइडिस के नहीं रहने के कारन उसकी सेनाओं को दूसरे

एक सेनापति के दोष से स्पार्टा के सर्दार 'लाइसांडर' ने जीत लिया। पर एथेन्स वालों ने ख़याल किया कि आलसीबाइडिस फिर दुश्मनों की तरफ़ मिल गया नहीं तो उनकी सेना कभी नहीं हारती इस बिचार से उन लोगों ने आलसीबाइडिस को फिर निकाल दिया और फिर साधारन सभा का राज जारी किया। आलसीबाइडिस इसके बाद अपनी जन्मभूमि फिर कभी न देख सका। फ़ारस के राजा के 'सिट्रापफ़ार्नबेजस' ने उसको मार डाला इसके बाद 'आरगिनुस' अंतरीप के निकट स्पार्टा और एथेन्स के जंगी जहाज़ में बड़ी लड़ाई हुई इस में भी एथेन्स वालों ने जय पाई; और दुश्मन का सेनापति कालिक्रेडास लड़ाई में मारा गया पर एथेन्स वाले ऐसे कृतघ्न थे कि जय करने वाले सेनापतियों को योंही कुछ दोष लगा कर प्राणदंड किया। मालूम होता है कि अब एथेन्स वालों का पाप अपने हद्द को पहुंचा गया था। क्योंकि लाइसांडर ने फिर स्पार्टा का सेनापति होकर इगसपटामस की लड़ाई में एथेन्स वालों के सब जहाज़ों को छीन लिया और जल्द एथेन्स पर चढ़ आया। एथेन्स वाले उस समय बिलकुल निरूपाय हो गये। लाइसांडर ने थेमिस्टक्लिस की बनाई एथेन्स की दीवार तोड़वा दिया और साधारन प्रजा के राज के बदले तीसों आदमियों के हाथ में राज का काम सौंपा और यह नियम किया कि एथेन्स वाले बारह जहाज़ से अधिक न रखने पावें और

एथेन्स वालों से यह भी इक़रार करा लिया कि वे स्पार्टा के दुश्मन को अपना दुश्मन और मित्र को अपना मित्र समझें। एथेन्स जो पहले यूनान का तिलक सुभझा जाता था अब नाम भर का रह गया यह बात ४०४ चार सौ चार बरस ईसा के जन्म के पहले हुई।

## नवां अध्याय।

तीसजनों का राज, सोक्रेटिस, विद्या की चर्चा,
फ़ारसीराज, जेनोफन, एजिसिलेअस,
अंटालसीडाभ का मेल।

एथेन्स में लाइसन्डर ने तीस आदमियों के इलाक़े जो राज का इन्तिज़ाम किया था उससे प्रजा पर बहुत जुल्म होने लगा। बहुत से लोग अपना मुल्क छोड़ छोड़ कर दूसरी दूसरी जगहों में चले गये। बदमाशों ने भी उपद्रव मचाना शुरू किया एथेन्स वालों की ऐसी दुर्गति हुई कि उनके शत्रु भी उस समय उनका हाल देख कर अफ़सोस करते थे। बहुत से स्पार्टा वालों ने भी अपने पुराने दुश्मन को गुलामी की हालत से छोड़ाने की ख़ाहिश दिखाने लगे। उन तीस आदमियों में से जिनको राज का काम सपुर्द

हुआ था कोई कोई प्रजा के दुख दूर करने का यत्न करने लगे उन में से एक शख्स थरामिनिस नामी ने लोगों की भलाई करने पर कमर बांधी इस लिये उस के साथियों ने डाह से उसको हेमलोक के पत्ते का रस जो एक तरह का बिष है पिला कर उसका काम तमाम किया।

उस वक़्त हेमलोक के रस से और भी एक बड़ा महात्मा मनुष्य मारा गया था। इस ने दुनिया में सिर्फ़ भलाई करने के लिये जन्म लिया था। डेलफ़ी के अपालो देवता ने कि जिसकी कला बड़ी जागती थी कहा था कि वह मनुष्य सब से बड़ा ज्ञानी है उसके शागिर्दों ने अनेक दर्शन शास्त्र बनाये हैं और उन्हीं शास्त्रों की रोशनी से सब सभ्य देश आज तक उंजियाले हो रहे हैं उसका चरित्र आज तक लोग उदाहरण के तौर पर मानते हैं उस अध्यात्म विद्या के बड़े आचार्य जगतगुरू का नाम सोक्रेटिस था। इस के पढ़ने से रोवां खड़ा हो जाता है ये जब कि जेल-खाने में थे तब अपने शिष्यों को आत्मा के नित्यता के विषय में जो उपदेश किया था उस को पढ़ने से सब के मन से मरने का डर जाता रहता है इसे और इस के शिष्यों से जो बातें हुईं उन्हीं का मतलब एकट्ठा कर इस के प्रिय शिष्य प्लेटो ने जीव यानी रूह को अमर ठहराया है इस किताब के पढ़ने से जीवात्मा के अमर होने पर बड़ा बिश्वास हो जाता है उसी के पढ़ने से 'क्लियम्ब्रोटस' नामी एक यूनानी ने आप से आप

अपनो जान दे दी। इस 'सोक्रेटस' के ऐसे आदमी ने भी राजदंड पाया। इस बात के ख्याल करने से साफ़ मालूम होता है कि इस दुनिया में जो सब बिपत आदमी पर पड़ती हैं, वे सब सिर्फ़ आदमी के निज अपराध ही के सबब से नहीं पड़तीं।

एथेन्स से जितने अच्छे अच्छे लोग निकाल दिये गये थे उन में से एक का नाम 'थ्रासीबूलस' था; तीस ज़ालिमों के ज़ुल्म से एथेंस की प्रजा भर का दम नाक में आरहा था इस लिये इस शख्स ने अपने मुल्क को स्वाधीन करने की कोशिश की यह एकाएक एथेंस पर चढ़ आया और उन तीसों ज़ालिमों को निकाल दिया। स्पार्टा वालों ने भी रहम कर एथेंस वालों को फिर स्वाधीन होने दिया। लाइसान्डर के दुश्मन स्पार्टा के राजा पसेनियस की कृपा से एथेन्स के लोग अपने देश में पहले सा राज फिर स्थापन किया।

इसके बाद एथेन्स के लोग जल्द किसी ख़ास लड़ाई में हाथ नहीं लगाया उनके शहर में 'आरिस्टफेनिस' वग़ैरह बड़े बड़े कवि और नाटक बनाने वाले थे। प्लेटो और 'डाइयोजिनिस' वग़ैरह दर्शन विद्या की चर्चा करते थे। थूसीडिडिटस आदि इतिहास जानने वाले लोग तरह तरह के इतिहास लिख कर यूनानियों का नाम सदा के लिये मशहूर करते थे। उस समय एथेन्स के लोग इन्हीं सब को देखने सुनने में अपना दिन काटते थे।

पर स्पार्टी वालों को काव्यरस नहीं सोहाता था सिर्फ़ लड़ाई ही उन लोगों का काम था। वे लोग जिस तरह से फ़ारसियों के साथ बड़ी लड़ाई में लगे उसका हाल लिखते हैं।

फ़ारस के राजा ने यूनान में बहुत सी सेना भेजी थी लेकिन कुछ बन नहीं पड़ा था इस लिये उनका बड़ा राज बहुत ही कमज़ोर पड़ गया था और उसके बाद वहां के किसी भी राजा को बहुत दिन तक राज करने और देश को फिर बली करने का अवकाश न मिला था। ज़र्क्सीस के बाद जितने राजा हुए उन में से कोई सात महीना और कोई दो महीना राज सिंहासन पर रहा। उन में से किसी ने भी कोई यश का काम करने का समय न पाया सब यहीं मरते गये। अन्त को आरटा 'ज़र्क्सीस' 'निमन' और साइरस इन दोनों भाइयों में राज के लिये बड़ी लड़ाई हुई। साइरस छोटा था वह राज पाने की लालसा से थोड़ी सी यूनानी सेना लेकर अपने बड़े भाई पर चढ़ गया बेबिलन के नज़दीक 'कुनाक्सा' नाम जगह में दोनों में लड़ाई हुई। उस लड़ाई में यूनानी सेना की जय हुई पर साइरस मारा गया। उसके बाद फ़ारस के राजा के नौकरों ने यूनानी लशकरों के अफ़सरों को नेवता के बहाने अपने घर बुलाया और मार डाला। इस तरह से यूनानी सेना दुश्मन के देश में अनाथ हो, बड़ी बिपत में पड़ी। पर नेक और ज़मामर्द

सिपाहियों के बलका क्या कहना है; दस हज़ार यूनानी सेना कुल बिपतों को काटती छांटती कुशल क्षेम से अपने देश को लौट आई। सोक्रेटस के एक शिष्य 'जनोफ़न' जो इतिहास जानने वाला था उस यूनानी सेना को अपने मुल्क तक लाया।

उस समय से यूनानी और फ़ारसियों में फिर लड़ाई चली। यूनान में स्पार्टा उन दिनों प्रधान था वहां के सर्दार लोगों ने सेना लेकर फ़ारस पर चढ़ाई की। 'एजीसीलेयस' नाम बहुत अक़्लमंद स्पार्टा के लंगड़े राजा ने फ़ारस देश को खूब बर्बाद किया और जब फ़ारसी लोग यनानियों से ज़ोर में न सके तो रुपयों से लड़ने लगे। उन लोगों ने आरगस, कौरिन्थ, एथिन्स, और थिबस वग़ैरह के रहने वालों को रुपया दिया और स्पार्टा के साथ लड़ने को उभाड़ा। जब इस लड़ाई का सामान हुआ तो स्पार्टा वालों ने अपने राजा 'एजीसीलिअस' को यूनान में फिर आने को कहा। वह भी अपने मुल्क की नामवरी को पूरी नहीं कर सका आख़िर को ३८७ बरस ईसा के जन्म के पहले 'अंटालसीडास' नामी एक स्पार्टा का रहने वाला फ़ारस में जाकर मेल कर आया। इस मेल में यह बात ठहरी कि एशियामाइनर के किनारे जो यूनान की नई बस्तियां सब थीं वे फ़ारस के राजा के दख़ल में हों और यह भी ठहरा कि यूनान के सब क्या छोटे क्या बड़े शहर स्वाधीन रहें और स्पार्टा के

सब जंगी जहाज़ फारस के राजा के हवाले किये जांय। स्पार्टा के आपस्वार्थी लोगों ने अपनी बड़ाई रखने के लिये इन सब बातों को मान यूनान की बड़ाई को फ़ारस के राजा के चरन पर भेंट कर दी।

---

## दसवां अध्याय।

### थिवस की बड़ाई, फिलिप, डिमथिनिस, मैसौडो-निया की बड़ाई।

स्पार्टा के लोग इस तरह से फ़ारस के लोगों के साथ दीनता से मेल करके अनेक उपायों से यूनान में अपनी प्रभूता चलाने का यत्न करने लगे। एक दिन उनके सेनापति फिविडास ने अधर्म से थिवस शहर का क़िला दख़ल कर लिया और उस में अपनी जात के कुछ सिपाही रख आया; इस पर स्पार्टा वालों ने फिविडौस को सजा तो दी लेकिन उसने जो क़िला दख़्ल किया था उसे छोड़ना न चाहा। उस समय में थिवस के साथ स्पार्टा वालों का मेल था इस लिये उन लोगों की ऐसी करनी मित्र के साथ देख सब यूनानी स्पार्टा वालों से बहुत चिढ़ गये उस समय पिलोपीडास नामी एक बड़ा योग्य मनुष्य थिवस से नीकाला गया

था वह जाकर दूसरी जगह रहता था और एक दिन रात के वक़्त थोड़े लोगों के साथ रूप बदल कर शहर में गया और स्पार्टा के कुछ दुष्ट आदमियों को तो मारडाला और बाकी लोगों को निकाल दिया इस तरह अपनी जन्म भूमि को उस ने फिर स्वाधीन किया। उस समय 'इपामीनंडास' नामी एक पंडित थिवस में था उस ने अपने शास्त्र की चर्चा छोड़ उस समय के काम की शस्त्र विद्या हासिल की। और लड़ाइयों में बड़ी बड़ी चालाकियां दिखलाई इस लिये उस को थिवस के लोगों ने अपना सेनापति बनाया। इपामीनंडास ने लड़ाई करने की बहुत सी हिकमतें निकाली और लिउकट्रा की लड़ाई में दुश्मनों को जीतकर स्पार्टा पर चढ़ गया। अब उस के समय में थिवस शहर यूनान में सब से बढ़ गया एथेंस वाले डाह से अपने दुश्मन स्पार्टा लोगों के साथ मिल गये पर तौभी वे थिवस का कुछ न करें सके। मांटीनिया की लड़ाई में एथेंस और स्पार्टा के सिपाहियों ने इपामीनंडास से हार माना लेकिन उस लड़ाई में इपामीनंडास आप मारा गया। उस समय स्पार्टा का मशहूर राजा एजिसिलेयस भी मर गया वह कुछ दिन पहले मिसर गया था इस लिये कि मिसर के लोगों ने फ़ारस के राजा से बाग़ी हो कर उस से मदद मांगी थी लेकिन एजिसिलेयस की मुराद पूरी नहीं हुई थी वह निर्बल होकर अपने मुल्क को फिर आया और यहां आकर परलोक सिधारा। इस समय स्पार्टा वाले बहुत लाचार

हो गये और मेल करना चाहा। और ३६१ बरस ईसा के जन्म के पहले मेल होने पर कुछ दिन तक लड़ाई बंद रही।

थिवस वालों ने बढ़ती के समय मासीडोनिया में सेना भेजी और वहां के राजाओं का आपस का देशी झगड़ा निपटा दिया और वहां के राजपुत्र फिलिप को थिवस शहर में मंगा लिया। इपमीनंडास फिलिप पर बहुत स्नेह करता था इस लिये उस को लड़ाई के ढंग और तौर सिखला कर खूब पक्का किया। फिलिप अपने मुल्क का राज पाने पर अपनी लड़ाई की विद्या दिखलाई। उसने धीरे धीरे मासीडोनिया और थ्रेस सामुद्री किनारों पर की अपनी नई बस्तियों को अधीन किया। मासीडोनिया की सेना को अच्छी तरह से शिक्षा दी। ग्रीस के वक्ताओं को घूस देकर अपने बस में लाया और जब सब यूनानी लोग मिल कर फोशीय लोगों से धर्म युद्ध कर ने को तैयार हुए तब वह किसी ढंग से उस मिले हुए लशकर का सेनापति हुआ। इस तरह से जब मासीडोनिया का राजा यूनान में प्रधान हुआ। तब कोई कोई बुद्धिमान मनुष्य उस पर संदेह करने लगे बिशेष कर के एथेंस शहर का बड़ा वक्ता 'डिमिसथिनिस' पहले ही से फिलिप का दिली मतलब समझ गया था। वह वहां के बड़े लोगों में से एक था; उस का हाल पढ़ने से बड़ा आश्चर्य्य होता है और जाना जाता है कि आदमी को असाध्य कोई वस्तु नहीं है यह लड़कपन में तोत-

लाता था और अपनी शरीर को हिलाया करता था; उसको याद रखने की भी शक्ति न थी; बहुत परिश्रम से जो याद करता था उसे थोड़े ही समय में भूल जाता था। इस को कोई अच्छा गुरू भी न मिला था। उस के साथ के पढ़ने वाले उसकी तोतली बोली और बदन हिलाने पर हंसते थे इसी वह तंग रहता था। डिमिसथिनिस ने इन सब दोषों के रहते भी ऐसा नाम पैदा किया कि सब लोग यह कहते थे कि उसके ऐसा बड़ा बोलने वाला सारी दुनिया में कोई दूसरा नहीं हुआ। वह लड़कपन ही से हकलाना दूर करने के लिये अपने मुंह में पत्थर के टुकड़े भर कर समुद्र के किनारे बड़े जोर से चिल्लाता था और आसन का दोष दूर करने के लिये अपने कंधे पर दो तेज तलवार रखता था इस लिये कि बदन हिलने ही से कट जाय। वह अपने याद करने की शक्ति बढ़ाने के लिये जो किताब पढ़ता था उस को अपने हाथ से लिखता था; विशेष कर के थिउसीडिडिस के बनाये हुए इतिहास को उसने आठवार लिखा था। लोगों से मुलाकात करने में समय नष्ट होगा यह समझ कर वह अपना आधा सिर मुड़ा घर के भीतर ही रहा करता था और अपने सामने आईना रख कर सभा में बोल ने का अभ्यास करता था जिस में बोलने या देह आदि हिलाने में कोई बुराई हो तो उसे दूर करें। 'डिमिस-थिनिस' इस तरह विद्या लाभ कर अपने देश की भलाई

करने में लगा। उसने यह देखा कि मासीडोनिया के राजा मन में बुरी लालसा रखता है और ऐसा खबरदार है कि अपने मन को थाह किसी को नहीं लगने देता। इस पर वह एथेंस वालों के बहने चेताता था कि फ़िलिप का बल बढ़ने मत दो। लेकिन एथेंस वालों ने पहले तो इस पर कुछ ध्यान न दिया निदान ३३८ बरस ईसा के जन्म के पहले जब फ़िलिप का दुष्ट अभिप्राय: खुला तो एथेंस वालों ने थिबस के लोगों के साथ मिल कर किरीनिया नामी जगह में उस से लड़ाई की लेकिन वे लोग इस लड़ाई में हार गये उस समय से मासीडोनिया का राजा फ़िलिप चाहे नाम भर का न हो पर असल में सारे यूनान का मालिक हुआ। और उस के बाद उस ने सब यूनानी सेना इकट्ठी कर फ़ारस पर चढ़ाई करना चाहा। ३३७ बरस ईसा के जन्म के पहले कोरिन्थ शहर में एक बड़ी सभा हुई उस में यह बात ठहरी कि यूनान के सब जगहों से सेना और रुपया लेकर फ़िलिप फ़ारस पर चढ़ाई करें। लेकिन 'पसेनियस' नामी किसी दुष्ट ने फ़िलिप को मार डाला इस से यह बात रुक रही।

## इग्यारहवां अध्याय।

### बड़े सिकन्दर का बयान एन्टिपेटर।

फ़िलिप के मरने के समय सिकन्दर की अवस्था बीस बरस की थी लेकिन उस ने छोटे ही अवस्था में अपनी स्वभाविक बड़ाई का प्रभाव लोगों पर प्रगट किया। उस ने राज-सिंहासन पर बैठते ही देखा कि मेरे बाप के दुश्मनों ने मुझे नालायक़ समझ कर फिर सिर उठाया। तो उस ने जल्द लड़ाई की तैयारी कर पहले थ्रेसी लोगों को दबाया और उन पर अपनी हुकूमत जमाई। बाद इस के और शत्रुओं को दबा कर अपने राज के उत्तर तरफ़ का सब बलवा मिटाया। उसी समय सुनने में आया कि यूनान के सब लोग एक साथ हो कर बिगड़ गये हैं विशेष कर के थिवस के रहने वालों ने सुना था कि थ्रेस की लड़ाई में सिकन्दर खेत आया इस लिये उन लोगों ने फिर अपनी बड़ाई पाने के लिये बिगड़े; पर सिकन्दर यह समाचार सुनते ही जल्द थिवस शहर में जा पहुंचा। उस को देखते ही थिवस के रहने वालों की होश हवास जाती रही। सिकन्दर उस समय ऐसे क्रोध में था कि सारे थिवस शहर को खोदवा कर पष्ट करवा दिया और जितने वहां के रहने वाले थे उन सबों को बतौर दासों के बेंच डाला। यद्यपि सिकन्दर के नाम में इस निठुरता

के कारन कुछ बट्टा लगा पर तौ भी इस से एक यह बड़ा लाभ हुआ कि दूसरे यूनानी बाग़ी लोग डर कर ठंढे हो गये और जैसा वे सिकन्दर के बाप को मानते थे वैसा ही उस को भी मानने लगे।

३३४ बरस ईसा के जन्म के पहले सिकन्दर ने तीस हज़ार पैदल और पांच हज़ार सवार के साथ फ़ारस देश पर चढ़ाई की। ग्रानिकस नदी के किनारे पहली जो लड़ाई हुई उस से सारा एशियामाइनर उस के हाथ में आगया; बाद इस के 'हालीकार्नासस' नामी क़िला की रक्षा जिस फ़ारस राज की तलब खाने वाली बड़ी यूनानी सेना करती थी, उसके दखल में हो गया। इस के बाद 'गडियम' शहर में जा कर वहां के मशहूर गांठ को काट दिया जिस से यह बात प्रसिद्ध हो गई कि सिकन्दर एशिया का नामी राजा होगा, अर्थात यह बात मशहूर थी कि जो आदमी उस गांठ को खोल सके गा वह एशिया भर का निष्कंटक राज करे गा। सिकन्दर उस ग्रंथि को हाथ से तो खोल न सका तब अपनी तलवार से काट दिया और कहा कि इसी तरह से राज मिलता है। इस के बाद वह सिडनस नदी के ठंढे पानी में स्नान किया और अचानक बुखार में फंसा। सिकन्दर ने अपने बीमारी में किसी आदमी से एक चिट्ठी पाई जिस में लिखा था कि सिकन्दर को चाहिये कि अपने वैद्य फ़िलिप की दवा न खाय क्यों कि फ़िलिप उस के बाप के दुश्मनों से घूस लेकर दवा के बदले उसे जहर

देगा। पर सिकन्दर लड़कपन ही से फ़िलिप को बहुत मानता था सिकन्दर को यह बात निश्चय हो गई थी कि फ़िलिप कभी ऐसा मेरे साथ न करेगा यह समझ कर जब फ़िलिप दवा लेकर आया तब सिकन्दर एक हाथ से दवा का कटोरा मुंह में लगा पीने लगा और दूसरे हाथ से जो चिट्ठी पाई थी वह फ़िलिप को पढ़ने को दी। जब कि फ़िलिप ने यह देखा कि हमारा मालिक हम पर ऐसा बिश्वास करता है तो वह ऐसा खुश हुआ कि कहा नहीं जाता।

फ़ारस का राजा दारायूस इतने दिन तक निश्चिन्त बैठा था बाद इस के बहुत सी सेना जमा कर सीलिसिया प्रदेश की सीमा पर आया और सिकन्दर को रोका; उस जगह का नाम इसस था वहां एक लड़ाई हुई जिस में फ़ारस का राजा हार कर भागा उस की माता, स्त्री, और दो लड़कियां सिकन्दर के हाथ आईं। सिकन्दर ने उन का आदर मान और सब तरह की रक्षा की। इस लड़ाई के बाद सिकन्दर ने बहुत यत्न से टायर और गाजा नामी शहरों को दखल किया और वहां के लोगों की वही गति की जो थिवस वालों की की थी और धीरे धीरे पालसटीन, सिरिया, और मिसर आदि प्रदेश जीत कर लिबिया में जुपिटर आमन देव की मूर्ति का दर्शन करने गया उस देवता के पुरोहितों ने यह कोलाहल किया कि वह उन के देवता का लड़का है। सिकन्दर ने नील

नदी के मुंह पर 'अलेकज़ेंड्रिया' नामी एक भारी शहर बसाया, जो थोड़े ही दिनों में तिजारत के लिये बड़ा प्रसिद्ध हो गया। टायर के बर्बाद होने पर चारो तरफ़ के सौदागर तिजारत के लिये इसी शहर में आने लगे।

इस समय दारायूस पहले से भी अधिक सेना जमा कर लड़ाई के लिये तैयार हुआ। सिकन्दर यह सुनते ही मिसर से चला और यूफ्रेटीस और टाइग्रिस को पार हो कर 'गगामिला' नामी जगह में आया और वहां उस ने फ़ारसी सेना का सामना किया कहते हैं कि जिस दिन यह लड़ाई हुई उस की पहली रात को उस के बड़े सेनापति 'पारमिनिउ' ने एक ऊंची जगह पर उसे ले जाकर शत्रु की सेना दिखाई जो सब ग़ाफ़िल सो रही थी और यह कहा कि इसी रात के समय उन पर चढ़ाई करनी चाहिये, लेकिन बड़े सिकन्दर ने यह उत्तर दिया कि मैं जय करना अपने बाहु-बल से चाहता हूं न कि चोरी से। दूसरे दिन की लड़ाई में सिकन्दर बिजयी हुआ। दारायूस अपना राज छोड़ कर भागा और अपने साथी बिसस के हाथ मारा गया। सिकन्दर ने इस बेसस को जैसा चाहिये वैसा दंड दिया। इस के बाद बाकट्रिया 'सगडियाना' आदि पहाड़ी प्रदेश सब सिकन्दर के अधीन हो गये और उस ने धीरे धीरे तूरान का दक्षिणी हिस्सा और काबुल इत्यादि जय किया। इस के पीछे वह 'अटक' शहर की किसी जगह से सिन्धु नदी पार हुआ उस समय पोरस नामी एक बड़ा बीर

पञ्जाब का राजा था वह क्षत्रिय था इस लिये उस ने सिकन्दर के साथ बड़ा संग्राम किया यद्यपि उस के सब सिपाही खेत आये और भाग गये पर तौ भी वह लड़ता रहा। एक को बहुत हैं कहां पोरस अकेला और कहां यूनानी फ़ौज का रेला; सबों ने घेर उसे पकड़ लिया और सिकन्दर के पास ले गये सिकन्दर ने उस से पूछा कि तुम्हारे साथ मैं कैसा सलूक करूं; भला पोरस कभी डरने वाला था जो यमराज होता तौ भी वह न डरता उस यवन जुवराज की क्या बात थी निडर हो बोला; राजाओं के साथ जैसा सलूक करना चाहिये वैसा ही करो। सिकन्दर इस अहंकार की बात सुन क्रोधित न हुआ बरन उस का राजाओं सा मान सन्मान किया और उस को उस का सब राजपाट फ़ेर दिया। पोरस को जीत कर सिकन्दर दक्षिण पूरब ओर गया पर शतद्रू नदी के किनारे पहुंचने पर उस की सेना जो बहुत दिन लड़ती लड़ती थक गई थी सिकन्दर के साथ आगे बढ़ना न चाहा। सिकन्दर इस सबब से लाचार अपनी इच्छा पूरी न कर सका लेकिन वह बिन कुछ किये न फिरा, सिन्धु नदी में बहुत से जहाज़ बनवा कर 'नियार्कस' नामी किसी अपने सेनापति को जहाज़ों का सर्दार बनाया और सिन्धु नदी की राह रवाना किया। उस ने आप लश्कर के साथ उस नदी के किनारे किनारे जितने प्रदेश थे सब जीत लिये और दक्षिण ओर चला। निदान जब उस ने हिन्द समुद्र को

देखा तब यह समझ कर कि और नये देश अब जीतने को न रहे रोने लगा। नियार्कस सब जहाज़ों को लेकर समुद्र में गया और अरब समुद्र हो कर फ़ारस के सागर में पहुंचा। सिकन्दर सिन्धु नदी को पच्छिम तरफ़ गया और बाद इस के बलोचिस्तान मरु-भूमि में पहुंचा और वहां बहुत क्लेश पाया और उस की सेना भी बहुत सी बर्बाद हो गई। निदान उस ने बेबिलन शहर में जा कर वहां अपनी राजधानी बनाई। लेकिन सिकन्दर बहुत दिन तक राज भोग न कर सका, क्योंकि वह बहुत शराब पीने लगा। एक दिन शराब की नशे की झोंक में अपने धाई के पुत्र 'क्लाइटस' को जो उसका बड़ा प्रिय सेनापति था अपने हाथ से मारडाला। इसी निशाखोरी के सबब से उसे ज्वर आया और ग्यारह रोज़ की वीमारी के बाद मर गया।

सिकन्दर दूसरे बीर राजाओं के ऐसा मार, काट, बहुत पसन्द नहीं करता था सिर्फ़ यश का भूखा था और यश भी केवल युद्ध ही से नहीं चाहता था और यह भी यत्न करता था कि जिस में लोग विद्या सीखें और सुख से रहें। सिकन्दर ने लड़ाई में जितने शहर बर्बाद किये उन से अधिक आवाद भी किये।

उस ने यूनान से आने के समय अपने साथ बहुत से इतिहास-बेत्ता और दर्शन शास्त्र जानने वाले पण्डितों को लाया था; उन्हीं लोगों के द्वारा एशिया खंड में यूनानी

शास्त्र और शिल्प विद्या की चलन हुई थी। सिकन्दर के गुरु प्रसिद्ध आरिसटटल ने भी अपने शिष्य के भेजे हुए बहुत तरह के रत्न और बेल बूंटे और जीव जन्तु पाकर प्राकृत विद्या की बड़ी उन्नति की।

सिकन्दर में और एक बड़ा गुण यह था कि जिन फ़ारसियों को वह लड़ाई में जीतता था, उन पर किसी तरह का फिर ज़ोर जुल्म न करता था बरन यह चाहता था कि वे लोग भी उस के देशी यूनानियों के सा ज्ञान और गुण में बढ़ें। उसने आप दारायूस राजा की लड़की के साथ बिवाह किया था और अपने सेनापति-लोगों को भी बड़े बड़े फ़ारसी लोगों की लड़कियों के साथ बिवाह करने की इजाज़त दी। वह इस तरह से यूनानी और फ़ारसी लोगों का आपस में मेल बढ़ा कर उन को एक नज़र से देखता था। पर यूनानी लोग इस बात से बहुत जलते थे। फ़ारसी लोग सिकन्दर को बड़ी भक्ति से दण्डवत प्रणाम करते थे इस लिये वह उन पर बहुत ही खुश रहता था। पर यूनानिय लोग स्वतंत्र स्वभाव के थे वे लोग यह सब नहीं देख सक्ते थे। इस लिये वे आपस में सिकन्दर से बिगड़ने की सलाह करने लगे। सिकन्दर ने बड़े यत्न से यूनानियों के इस बलवे को दबाया तो सही, पर उसे इस में 'पारमोनियो' और उस के लड़के 'फ़िलोटास' आदि कई एक बड़े बड़े सेनापतियों को प्राण दण्ड पड़ा।

सिकन्दर बड़ा प्रतापी और महापुरुष था इस में कुछ

कर उस को सारा राज उन लोगों ने आपस में बांट लिया। यह डेमिस्ट्रियस कुछ दिनों के बाद एथेन्स में जाकर बहुत से लोगों को अपनी तरफ़ मिला लिया और मासीडोनिया का राजा हो बैठा। पर लालच बुरी बला होती है राज पाने पर भी संतोष कर न बैठ सका 'इपाइरस' के राजा 'पिरहस' पर चढ़ा आख़िर को मुंह का खाया और भागा। पर सेलुकस के हाथ लगा उन्हों ने उसे भर ज़िन्दगी के लिये क़ैद कर रक्खा। 'पिरहस' ने कुछ दिन तक मासीडन में राज किया बाद इस के थ्रेस के राजा लिसिमाकस ने उस पर चढ़ाई की; तब पिरहस लिसिमाकस से लड़ाई में हार गया और मासिडन छोड़ दिया। लिसिमाकस सारे यूनान और मासीडन में एक छत्र राज करने लगा। वह प्रजा के पालने में बुरा न था लेकिन बदनसीबी से अपनी दूसरी स्त्री के उसकाने पर अपनी एक और स्त्री के लड़के को मार डाला तब उस की बेवा पतोह दुखी हो कर सेलुकस के पास भाग गई। सेलुकस इस के कहने पर लिसिमाकस से लड़ने लगा और २८१ बरस ईसा के जन्म के पहले 'साइरूपिडन' की लड़ाई में लिसिमाकस और उस की सेना खेत आई। पर सेलुकस को यूनान का राज न मिला; मिसर के राज 'टलोमी' के लड़के 'टलोमीसेरानस' ने सेलुकस को मार आप मासिडन का राजा हुआ। लेकिन इस समय 'कैलुट' जात के बहुत से लोग यूनान में आ पहुंचे उन के साथ लड़ाई में

# बारहवां अध्याय ।

## सिकन्दर के उत्तराधिकारियों का बयान ग्रीस में रोम वालों का इख़्तियार ।

सिकन्दर अपने मरने के समय यह भी कह गया था कि जो सब से लायक होगा वही सिंहासन पर बैठैगा । मालूम होता है कि उस महात्मा को यह बात खुल गई थी कि मेरे राजसिंहासन के लिये बहुत से लोग लड़ेंगे इस लिये किसी एक आदमी को उत्तराधिकारी बना जाना अपनी इज़्ज़त में बट्टा लगाना है । सिकन्दर के जिन सेनापतियों को जो जो जगहें मिलीं वे वहां के राजा हो दूसरे से लड़ने लगे । 'टलमिसोटर' मिसर का राजा हुआ । एन्टिपेटर और उस के बेटे 'कासांडर' ने मासीडोनिया का राज लिया । 'एन्टिगोनस' और 'इउमिनिस' को एशिया-माइनर मिली; 'सेलुकस' बेबिलन का स्वामी हुआ और 'लिसिमाकस' थ्रेस में राज करने लगा ।

कासांडर ने धीरे धीरे सिकन्दर के बंश का उच्छेद किया । एन्टिगोनस ने इयुमिनिस को मार डाला इस लिये सब सेनापति उस पर क्रुद्ध हुए और उस से लड़ने लगे और २०१ बरस ईसा के जन्म के पहले उसको और उस के बेटे 'डेमिट्रियस' को 'इपसस' की लड़ाई में जीत

ईसा के जन्म के पहले सेलासिया की लड़ाई में स्पार्टा का राजा हार गया।

जिस समय एकीया वाले आपस में मेल करके प्रबल होने का यत्न करते थे उस समय यूनान के बीच के इलाके के इटोलिया के लोगों ने भी उसी तरह आपस में मेल किया। उस समय एथेन्स, स्पार्टा, थिबस आदि कमज़ोर हो गये और उन के बदले एकीया, इटोलिया और मासीडोनिया वाले बहुत प्रबल हुए। उन की आपस की लड़ाई से यूनान की स्वाधीनता बिलकुल जाती रही। और रोम वाले उस समय बहुत प्रबल हो कर अपना राज बढ़ाते थे। मासिडन का राजा फ़िलिप उन के साथ लड़ने लगा; इटोलिया की सेना रोमी लोगों की तरफ़ मिल गई और साइनोसिफिली नाम स्थान में १९७ बरस ईसा के जन्म के पहले जो लड़ाई हुई उस में मासीडन का राजा हार गया। इस समय से रोम वालों ने यूनान में बड़ाई पाई थी। फ़िलिप के मरने बाद उस का बेटा परसियस राजा हुआ यह रोम वालों की बड़ाई नहीं सह सका इस लिये वह उन से लड़ने लगा १६८ बरस ईसा के जन्म के पहले पिडाना में जो लड़ाई हुई उस में रोमियों ने जय प्राप्ती करी और परसियस क़ैद किया गया। इस के कुछ दिन पीछे एकीया वाले मूर्खता से रोमियों के साथ लड़ने लगे इस लिये रोम वालों ने यूनान पर चढ़ाई की १४६ बरस ईसा के जन्म के पहले लकोपिट्रा की लड़ाई में एकेया वालों को जीत कर को-

रिन्थ शहर को बर्बाद किया उस समय यह बात भी ठहरी कि यूनान में और किसी तरह का मेल न होगा और रोमी लोग यूनान में राज करेंगे।

---

सम्पूर्णम्।